वर्ष- १४ अंक १०
२७ जून २०१८

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल 32/2018-20
एक प्रति- २०.०० रु.

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

एक दृष्टि में आर्य समाज

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

ओ३म्
वैदिक रवि
मासिक

वर्ष 16 अंक–10

27 जून 2018
(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)
सृष्टि सम्बत् 1,96,08,53,119
विक्रम संवत् 2075
दयानन्दाब्द 194

सलाहकार मण्डल
राजेन्द्र व्यास
पं. रामलाल शास्त्री 'विद्याभास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक
श्री इन्द्रप्रकाश गॉधी
कार्या. फोन : 0755 4220549

सम्पादक
प्रकाश आर्य
फोन : 07324 226566

सह सम्पादक
मुकेश कुमार यादव
फोन : 9826183095

सदस्यता
एक प्रति – 20–00 रू.
वार्षिक – 200–00 रू.
आजीवन – 1000–00 रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ 2 एवं 3	500 रू.
पूर्ण पृष्ठ (अन्दर)	400 रू.
आधा पृष्ठ (अन्दर का)	250 रू.
चौथाई पृष्ठ	150 रू.

अनुक्रमणिका

क्र. विषय	पृष्ठ
सम्पादकीय	4
सफलता के पांच मूल सूत्र	7
स्वामी दयानन्द की दृष्टि में यज्ञ	8
सकारात्मक सोच की विजय	9
उपासना किसकी	11
वेदों में विज्ञान संकेत	14
गाय सर्वोत्तम क्यों	15
महर्षि दयानन्द सरस्वती की महानता	16
स्वच्छता अभियान	17
वैदिक ज्ञान प्रश्नावली	18
आर्य समाज मन्दिर मुरार ग्वालियर का वार्षिकोत्सव	20
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा की वृहद बैठक सम्पन्न	21
आर्य समाज का शपथ ग्रहण कार्यक्रम आयोजित	22
आर्य समाज गंज सीहोर का 87वाँ वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न	24
आर्य समाज रतलाम का तीन दिवसीय उत्सव सम्पन्न	26

जून माह के पर्व त्यौहार एवं जयन्ती

■ डॉक्टर्स एवं सी.ए. दिवस	1
■ डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी जयंती	6
■ विश्व जनसंख्या दिवस, संत रामदेव पुण्य तिथि	11
■ लोकमान्य तिलक जयंती, चन्द्रशेखर आजाद जयंती	23
■ डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम पुण्यतिथि, गुरू पूर्णिमा	27
■ मुंशी प्रेमचंद जयंती, उधमसिंह शहीदी दिवस	31

सम्पादकीय–

एक चिन्तन –

प्रजातन्त्र में प्रजा के साथ कितना बड़ा मज़ाक ?

राजनैतिक दलों के गठन का मूल उद्देष्य समाज, राष्ट्र, मानव विकास और सुरक्षा के लिये होना चाहिए और सभी दल द्वारा अपने कार्यों की घोषणा में यही बढ़ा–चढ़ाकर दर्षाया जाता है। किन्तु क्या ऐसा हो रहा है ? राजनैतिक दलों की भावना कहीं हटकर निज स्वार्थ तक तो नहीं आ गई। यदि ऐसा होता है तो निष्चित ही समाज के साथ एक बड़ा विष्वासघात है।

कुछ समय पूर्व तक लगभग सभी पार्टियॉ कॉग्रेस को एक भ्रष्ट, वंष परम्परा की पोषक, जातिवाद व साम्प्रदायिकता की जननी कहते थे। कितना आष्चर्य है जो कल तक कांग्रेस को कोसते थे, देष का दुष्मन मानते थे, आज वो एक साथ खड़े हो गये ? मायावती और सपा एक दूसरे को भ्रष्टाचारी और कांग्रेस को कोसते थे, वे आज साथ क्यों हैं ? कल तक जे.डी.एस. और कांग्रेस कर्नाटक में एक दूसरे को बेईमान और भ्रष्टाचारी चुनाव तक कहते रहे वे एक क्यों हैं ?

ममता और लेफ्ट एक दूसरे को जानी दुष्मन व आरोप प्रत्यारोप लगाते रहे आज कर्नाटक में एक साथ दिखे ? इसके अतिरिक्त षिवसेना जो हिन्दुत्व का राग अलापती है महाराष्ट्र के बाहर जिसका अस्तित्व नहीं है वह भाजपा के विरूद्ध जाकर इन सिद्धान्त व नैतिक स्तर से गिरे हुए संगठनों को शक्ति प्रदान करने का प्रयास कर रही है क्यों ?

इन सबके मिलन के दो ही कारण हो सकते हैं। पहला तो जिन कारणों से पूर्व में सत्तारूढ़ दल कांग्रेस में जो बुराईयॉ थी वह उससे समाप्त हो गई, और अब वह एकदम निर्मल, पवित्र राष्ट्र के प्रति समर्पित पार्टी हो गई है। ऐसा मानकर **"बीती ताहि बिसार दें, आगे की सुध लें"** के अनुसार उसे अपना लिया। इसका दूसरा कारण यह भी हो सकता है, कि जिन बुराईयों से नफरत थी, जिसके कारण कांग्रेस से दूरी थी, वे अब हमारा भी चरित्र बन गया। इसलिए हमने उन्हें दूर करने के स्थान पर स्वयं उसे अपना लिया, इस तरह आपसी भेदभाव स्वतः समाप्त हो गए। जब सभी एक राग में गा रहे हैं, एक सुर में है, बस मोदी नहीं तो फिर एकत्रित होना तो स्वाभाविक ही है।

जरा सोचें, इस संगठन के पीछे क्या कारण है । क्या ये सब राष्ट्र हितैषी बनकर राष्ट्र के प्रति सहानुभूति रखते हैं, इसलिए एक हो गए ? क्या सभी का उद्देश्य राष्ट्र उन्नति हैं ? या फिर भारत को सषक्त बनाने के लिए अपना–अपना अहं त्याग करके, अपना अस्तित्व मिटाकर राष्ट्रहित में एक साथ खड़े हो गये हैं ?

यदि ऐसा होता है तो उनका संगठित होना राष्ट्र हित में है, स्वागत योग्य है। किन्तु पूर्व कार्य प्रणाली, पूर्व का इतिहास यदि ऐसा नहीं है और **दागिला** है तो

तो फिर यह संगठन हितकर नहीं है, यह मानना होगा। क्योंकि ऐसा भी नहीं है कि मोदी सरकार की कार्य प्रणाली राष्ट्र के लिए घातक हो गई है जिसमें भ्रष्टाचार बढ़ रहा है अन्तर्राष्ट्रीय छवि में भारत की गिरावट आई है, देष में दंगे हो रहे हैं, मोदी भ्रष्टाचारी है, भाई–भतीजावाद, वंशवाद को बढ़ावा दे रहा है। ऐसा कुछ नहीं है।

सरकारी ऑकड़ों में सुनते हैं, पानी, बिजली, सड़कों का जितना विस्तार इन चार सालों में हुआ वह एक चमत्कार है। स्वच्छता के नाम पर ग्रामीण क्षेत्रों में जो परिवर्तन आया वह अकल्पनीय था, करोड़ों घरों में गैस, शौचालय, बिजली का कार्य हुआ। गरीबों में बैंक खातों, सस्ती दवाई और बीमा योजना अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि मानी जा सकती है।

हॉ देष में कानून को कठोर बनाया इससे कुछ परेषानी बढ़ी किन्तु राष्ट्र को एक स्वस्थ, स्वच्छ और भ्रष्टाचार मुक्त देष बनाने के लिए की।

परन्तु जहॉ ममता बेनर्जी के प्रदेष में कत्ले आम हो रहा है, विपक्षी दल के कार्यकर्ताओं को मौत के घाट उतारा जा रहा है, मुस्लिम तुष्टिकरण के कारण हिन्दुओं पर जुल्म ढ़ाये जा रहे हैं ? अवैधानिक रूप से बांग्ला देष के घुसपैठियों को बसाकर वोट बैंक बढ़ाया जा रहा है राष्ट्र के साथ खुला धोखा हो रहा है, किन्तु उसका विरोध कोई क्यों नहीं कर रहा है, क्यों ?

लालू प्रसाद यादव जो भ्रष्टाचार में दोषी पाए गए। हजारों करोड़ की बेनामी सम्पत्ती स्वयं के और परिवार के नाम पर भ्रष्टाचार से हो गई। कई केसों में दोषी पाये जाकर जेल में हैं परन्तु उनके इन कार्यों को आदर्ष मानते हुए जो पार्टी जेल से पेरोल पर आने पर उनका भव्य स्वागत करे, हिन्सा को अपनावे वह जे. डी. यू. आज साथ में है ?

कांग्रेस के कई वे सारे दिग्गज भ्रष्टाचार और भाई भतीजावाद के पाप से जुड़े हैं। स्वयं राहुल गॉधी, सोनिया गॉधी, दामाद वड़ेरा पर भ्रष्टाचार की कार्यवाही चल रही है परन्तु यह सब भुलाकर इनके साथ खड़े हैं।

अपने आप में इस सरकार की यह उपलब्धी है। जहॉ देष का सबसे बड़ा कलंक भ्रष्टाचार है, किन्तु एक ऐसा व्यक्ति जिस पर 4 साल में भ्रष्टाचार की आज तक कोई उंगली तक नहीं उठी।

अनेक प्रदेषों में साम्प्रदायिक दंगें होना बन्द हो गये। जहॉ भ्रष्टाचार पर नियन्त्रण करने के प्रयास किये जा रहे हैं भ्रष्टाचारी अधिकारी, शासकीय कर्मचारी और राजनेताओं, व्यापारियों पर भ्रष्टाचार, कालेधन, बेनामी सम्पत्ती के कारण कानूनी कार्यवाही हो रही है। भारत की वर्षों में पड़ोसी देषों से और विष्व में अग्रणी देषों में जो साख बनी है सम्मान व मित्रता बढ़ी है वह मोदी जैसे व्यक्तित्व का ही परिणाम है। आज विष्व में भारत को एक सम्मानजनक स्थान प्राप्त हुआ है यह प्रत्येक भारतीय के लिए गौरव की बात है।

किन्तु ये सारी अच्छाइयॉ एक तरफ हैं, इससे कुछ कुर्सी प्रेमी भयभीत होगए। समाज को एक व्यवस्थित सुषासन सरकार ने दिया तो मोदी, मोदी ही हो जावेगा जैसा कि हो रहा है। यह सफलता सबको सता रहा है।

साम्प्रदायिकता व अपराधी प्रवृत्ती के लोग परेषान हैं गुण्डागिरी पर उत्तर प्रदेष जैसे प्रदेष में नियन्त्रण हो गया। गुण्डे उत्तर प्रदेष छोड़कर भाग गये, जेलों में हैं या इनकाउन्टर में मारे गये। भू माफियाओं पर लगाम कस दी गई।

इन सब बातों से परेषान होकर सरकार के विरूद्ध विपक्षी दल जातिवाद के नाम पर आरक्षण और विषेष सुविधायें प्राप्त करने के लिए नए नए व्यक्ति तैयार किये। गुजरात में यह जहर बहुत बड़े शड़यन्त्र के रूप में विधानसभा निर्वाचन के पूर्व फैलाया। जे.डी.यू. में राष्ट्र विरोधी विचारधारा को उकसाया अफजल गुरू की महिमा गान की गई। न्यायालय के प्रति अभद्र विचार फैलाये, देष को तोड़ने वाले नारे लगाये, इसे रोकने हेतु सरकार द्वारा कठोर कदम उठाये तो आष्चर्य है उनके बीच राहुल गॉधी पहुंचते हैं उन्हें अप्रत्यक्ष रूप से समर्थन देने हेतु किसी दल ने इस राष्ट्र विरोधी उन्माद का विरोध नहीं किया क्यों ? मात्र इसलिए कि इससे मोदी सरकार के विरूद्ध एक वातावरण बनेगा।

जम्मु काष्मीर में सेना सुरक्षा बलों और गैर मुस्लिमों के साथ हो रहे अत्याचार राष्ट्र विरोधी कार्यों को कोई बुरा नहीं कह रहा। पत्थरबाजों, आतंकवादियों को रोकने का कोई नहीं कहता। क्यों ?

यह सब इसलिए कि सरकार बदनाम हो जावें, उस पर सुरक्षा के भय का प्रष्न चिन्ह लगे। दलितों को, किसानों को उकसाने की नई–नई योजना बनाई जा रही है, देष में हड़ताल, चक्काजाम, आगजनी सबकुछ करवाया जा रहा है क्यों ?

देष एक अच्छे लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है औद्योगिक, शहरी व ग्रामीण विकास के साथ मानवीय विकास की योजना तेजी से प्रगति पर है। उस समय विपक्ष जयचन्द की भूमिका का निर्वाह करके मोदी सरकार को बदनाम और किसी भी प्रकार से 2019 के लोकसभा निर्वाचन से दूर करना चाहते हैं।

इस गठबन्धन से परमार्थ नहीं स्वार्थ की बू आ रही है। सबको अपना अस्तित्व मिटते नजर आ रहा है। इसलिए एकजुट होकर शक्ति बढ़ाने में लगे हैं, जिसमें कुर्सी, पार्टी और स्वार्थ मिला है। कहा गया **"स्वार्थी दोषात् न पश्यति"** स्वार्थ में दोष दिखाई नहीं देते। जैसा कि संगठन के दल वालों को एक दूसरे में कोई दोष नहीं दिखाई दे रहा है।

हाल ही में कर्नाटक के परिणाम आए, उनकी खुषियों में भाजपा की कर्नाटक में सरकार न बनने पर पाकिस्तान में भी खुषियॉ मनाई।

वक्त की पुकार है किसी भी पार्टी के प्रभाव या लकीर के फकीर बनकर ना रहें भाजपा हो, कांग्रेस हो, मायावती, लालू, अखिलेश का दल हो सबके ऊपर राष्ट्रहित, संस्कृतिहित सोचना आवश्यक है। देषवासी – अब तो इन काले दिल वाले राष्ट्र नहीं स्वार्थ और कुर्सी के लिए जीने वालों को पहचानों।

यह लेख किसी राजनैतिक दल की प्रशंसा करने, उसके प्रचार–प्रसार की भावना से नहीं लिखा ना लेखक का किसी राजनैतिक दल से कोई सक्रिय संबंध है। मात्र राष्ट्रहित के चिन्तन के आधार पर स्वतन्त्र विचारों की अभिव्यक्ति है।

सफलता के पांच मूल सूत्र

0 मन में कार्य करने की तीव्र इच्छा

0 कार्य करने के लिए पर्याप्त साधन

0 साधनों का प्रयोग करने की यथार्त विधि

0 अन्तिम परिणाम आने तक पूर्ण पुरूषार्थ

0 बाधकों को सहन करने हेतु घोर तपस्या

प्रिय पाठकवृन्द,

वैदिक रवि आपका अपना, अपनी सभा का पत्र है। प्रयास किया जा रहा है कि यह अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक पत्रिका बनें। हमारी अपनी बात उन लोगों तक भी पहुंचना चाहिए जो वैदिक विचारों से दूर हैं। इसी भावना से पत्रिका का सम्पादन किया जा रहा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़े और इसे पसन्द करे। इसके अधिक से अधिक पाठक हो सकें, इसलिए वैदिक रवि के ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी बनें, अपने परिवार, मित्रों, सगे संबंधियों को इसके ग्राहक बनाइए।

विशेष–बार–बार निवेदन किया जा रहा है कि पत्रिका का और अच्छा स्तर बनें। इस हेतु अपने या स्थापित विद्वानों के लेख, विचार, कविता, समाचार महू के पते पर प्रेषित करें। कृपया इस ओर ध्यान देवें।

"स्वामी दयानन्द की दृष्टि में यज्ञ"

जब अग्नि में सुगन्धित पदार्थों का हवन होता है, तभी यह यज्ञ वायु आदि पदार्थों को शुद्ध करके तथा शरीर और ओषधि आदि पदार्थों की रक्षा करके अनेक प्रकार के रसों को उत्पन्न करता है। उन शुद्ध पदार्थों के भोग से प्राणियों के विद्या, ज्ञान और बल की वृद्धि भी होती है।

जो यज्ञ के धूम से शोधे हुए पवन हैं, वे अच्छे राज्य के कराने वाले होकर रोग आदि दोषों का नाश करते हैं और जो अशुद्ध अर्थात दुर्गन्ध आदि दोषों से भरे हुए होते हैं वे सुखों का नाश करते हैं। इससे मनुष्यों को चाहिए कि अग्नि में होम द्वारा वायु की शुद्धि में अनेक प्रकार के सुखों को सिद्ध करें।

मनुष्यों को योग्य है कि यज्ञविधि से सब पदार्थों का अच्छे प्रकार शोधन करके, सबका सेवन कर और रोगों का निवारण करके सदैव सुखी रहें।

यदि यजमान और यज्ञ करने वाले विद्वान हों और सुशोधित द्रव्यों को अग्नि में होमें तो क्या क्या सुख प्राप्त न हों।

मनुष्यों को चाहिए कि वे आप्त विद्वानों के संग से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि करने वाले यज्ञ का विस्तार करें।

जो यज्ञ से शुद्ध किये हुए अन्न, जल और पवन आदि पदार्थ हैं, वे सबकी शुद्धि, बल, पराक्रम और दृढ़ दीर्घ आयु के लिए समर्थ होते हैं, इससे सब मनुष्यों को यज्ञकर्म का अनुष्ठान नित्य करना चाहिए।

मनुष्य अग्नि में जो आहुति देते हैं वह वायु के साथ मेघमण्डल में जाकर सूर्य से आकर्षित जल को शुद्ध करती है। फिर वहां से वह जल पृथ्वी पर आकर ओषधियों को पुष्ट करता है। वह उक्त आहुति वेदमन्त्रों से ही करनी चाहिए, जिससे उसका फल–ज्ञान होने पर नित्य श्रद्धा उत्पन्न हो।

जिस यज्ञ से सब सुख होते हैं, उसका अनुष्ठान सब मनुष्यों को क्यों न करना चाहिए ?

जो मनुष्य अग्निहोत्र आदि यज्ञों को प्रतिदिन करते हैं वे समस्त संसार के सुखों को बढ़ाते हैं, यह जानना चाहिए।

होम नामक यज्ञ वह है, जिसमें मांस, क्षार, अम्ल, तिक्त आदि गुणों से रहित किन्तु सुगन्धि, पुष्ठ, मिष्ट, रोगनाशक आदि गुणों से युक्त द्रव्य हो।

जो मनुष्य यज्ञ से शुद्ध किये जल, ओषधि, पवन, अन्न, पत्र, पुष्प, फल, रस, कन्द अर्थात अरबी, आलू, कमेरू, रतालु, शकरकन्द आदि पदार्थों का भोजन करते हैं वे नीरोगी होकर बुद्धि, बल, आरोग्य और दीर्घायु वाले होते हैं।

मनुष्य नित्य सुगन्ध्यादि पदार्थों को अग्नि में छोड़ अर्थात हवन का, पवन और सूर्य की किरणों द्वारा वनस्पति, ओषधि, मूल, शाखा, पुष्प और फलादिकों में प्रवेश कराके सब पदार्थों की शुद्धि का आरोग्य की सिद्धि करें।

बोधकथा –

सकारात्मक सोच की विजय

"सकारात्मक सोच जीतने का विश्वास प्रदान करती है और जो पूर्ण विश्वास व लगन से कार्य करेगा वो अवश्य ही सफल हो जायेगा।" – **लेखक**

शहर से बहुत दूर एक ऊँची पहाड़ी पर एक गॉव बसा हुआ था। गॉव की जमीन पथरीली व बंजर थी। वहां हैंडपम्प लगाना और कुऑ बनाना संभव नहीं था। उस गॉव के निवासी अत्यन्त गरीब होने के कारण ट्यूबवैल नहीं लगवा सकते थे। उस समय एक गॉव के चार व्यक्ति दूर तालाब से पानी भरकर लाते और निर्धारित दामों पर बेच देते थे। इन लोगों को काम के लिए सुबह जल्दी उठना पड़ता था, तथा दिनभर कठिन मेहनत करनी पड़ती थी।

इसी गॉव का एक व्यक्ति किसी कारण शहर हो कर आया, वहॉ उसने प्लास्टिक की नलकियों द्वारा पानी खींचते हुए देखा था। इससे उसके दिमाग में एक योजना बन गई जिससे गॉव वालों को कम कीमत पर अधिक पानी उपलब्ध कराया जाए। फिर एक दिन उसने प्लास्टिक की नलकियों (पाइपों) द्वारा तालाब से गॉव तक पानी लाने की योजना पूरी करने की ठान ली।

समय गुजरता गया उसने तालाब से गॉव तक जल्दी आने–जाने का छोटा रास्ता ढूँढ़ निकाला और अपने उस खोजे गए रास्ते पर फावड़े से जगह–जगह निशान लगा दिये।

एक दिन वह अपनी सारी जमा–पूँजी लेकर बाजार **गया** और प्लास्टिक की नलकियॉ खरीद लाया।

दूसरे दिन वह स्वयं ही तालाब पर पहुंचा और उन नलकियों को जमीन के अन्दर बिछाने हेतु तालाब के पास खुदाई का कार्य करना प्रारंभ कर दिया। उसे यह कार्य करते हुए कुछ ही क्षण बीते कि वे चारों व्यक्ति जो पानी बेचने का काम करते थे उस तालाब पर पानी भरने आ पहुँचे। जब उन व्यक्तियों ने उसे वहॉ खुदाई करते देखा तो वे सभी उसके पास गये और उनमें से एक व्यक्ति ने पूछा,–भइया! बहुत दिनों से देख रहा हूँ कि तुम यहॉ से लेकर गॉव तक इधर–उधर फावड़े से निशान लगा रहे थे। अब देख रहा हूँ कि तुम खुदाई भी करने लगे हो। आखिर तुम ऐसा किसलिए कर रहे हो ?

उस व्यक्ति ने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया – "भाई साहब मैंने जो फावड़े से निशान लगाये थे, उस रास्ते से मुझे पाइप लाइन बिछानी है, अब खुदाई करके इसमें प्लास्टिक की नलकियों को जोड़कर पाइप लाइन बिछा दूँगा, जिससे इस तालाब का पानी पाइप लाइन के जरिए गॉव तक पहुंचेगा। तब मैं पानी बेचने का

व्यापार करूँगा।

उस व्यक्ति का इतना कहना था, कि वे चारों आदती जोर–जोर से हॅसने लगे, फिर उनमें से एक बोला, "अरे मूर्ख ! ऐसा हो ही नहीं सकता। तेरी प्लास्टिक की नलकियों से पानी गॉव तक कभी नहीं पहुंच पायेगा।"

दूसरे ने कहा – "अरे भइये ! तू मेरी मान तो अभी इन पाइपों को बाजार में जाकर बेच दे, वर्ना कहीं ये गड्ढ़े में पड़ गयी, तो ये सड़ जायेंगी फिर तेरी सारी जमा पूँजी बेकार हो जायेगी।"

तीसरे ने कहा, – "अरे, जब तुझे पानी बेचने का बिजनेस ही करना था। तो हमसे मिल लेता। बेकार में मेहनत कर डाली। चल मेरे साथ में आ जा। देख मैं रोज इस तालाब से बीस बाल्टी पानी ले जाता हूँ और दो रूपये प्रति बाल्टी बेचता हूँ। जिससे मुझे चालीस रूपये रोज आमदनी होती है।

चौथे व्यक्ति ने तीसरे व्यक्ति की हॉ में हॉ मिलाते हुए कहा – "मेरे साथी बिल्कुल सही कह रहे हैं, तेरी भलाई इसी में है कि तूँ हम लोगों की बात मान ले।

इस पर जो व्यक्ति खुदाई कर रहा था, कुछ देर तक सोचता रहा फिर बोला, 'भाई लोगों' जो कुछ आप लोग कह रहे है, वो शायद ठीक हो, परन्तु मुझे पूर्ण यकीन है कि मेरी योजना कामयाब रहेगी। मेरा काम पूरा होते ही इस पाइप लाइन के जरिये पानी जरूर गॉव तक पहुँचेगा।

इस पर चारों एक साथ बोल पड़े, – 'अरे बेवफूफ ! जा किसी डॉक्टर से अपना इलाज करवा ले। तू पागल हो गया है। तू जो सोच रहा है वो काम असम्भव है। तेरी इस पाइप लाइन से पानी नहीं आयेगा और यदि आ गया तो देखेंगे कि तू इन प्लास्टिक के जरिए गॉव तक पानी कैसे ले जायेगा, ऐसा कहकर वो चारों वहाँ से चले गए।

जब वे चारों चले गए तो व्यक्ति पाइप बिछाने के अपने काम में जी जान से जुट गए। समय बीतता गया, अन्ततः पाइप लाइन दिखाने वाले व्यक्ति ने भीड़ के सामने औपचारिक रूप से वाल्व खोल दिया।

कुछ ही देर बाद उस पाइप लाईन से साफ पानी आने लगा। इकत्रित भीड़ में उल्लास छा गया क्योंकि अब उन लोगों को कम पैसों में अधिक पानी मिलने वाला था।

इस कहानी से पता चलता है, कि जब कोई व्यक्ति नया काम करने चलता है, तो समाज उसे रोकता है, टोकता है, उस पर हॅसता है और उसे चिढ़ाता भी है। परन्तु जो इस रूकावटों को भूलकर निरन्तर संघर्ष करता रहता है वह व्यक्ति एक दिन अपने कठिन से कठिन कार्य को अंजाम दे डालता है, अतः हम कह सकते है कि मेहनत और आत्मविश्वास के साथ–साथ सकरात्मक सोच ही रंग लाती है।

उपासना किसकी ?

प्रेष्ठं वो अतिथिँूस्तुषे मित्रमिव प्रियम्।
अग्ने रथ न वेद्यम्।। (सामवेद–5)

अर्थ – हे मनुष्यों तुम मित्र के समान हित साधक, अतिप्रिय, निरन्तर रहने वाला हृदय में जो ध्याने योग्य है, जो रथ के समान सबको गन्तव्य तक पहुंचाने वाला एवं स्वयं के प्रकाश से जो प्रकाशित है उसी परमात्मा की स्तुति करो।

मन्त्र में बताया जिसकी स्तुति करना चाहिए, वह जिस प्रकार का हो वह सबका आधार हो, सदैव रहने वाला हो, स्वप्रकाश स्वरूप हो वही हृदय में ध्यान करने योग्य है। ऐसे परमपिता परमात्मा की स्तुति करके ही परम आनन्द को प्राप्त किया जा सकता है। परमात्मा सत्‌चित् आनन्द अर्थात् सच्चिदानन्द उसके सम्पर्क में आकर ही सच्चे आनन्द की अनुभूति एवं राग, द्वेष भय से निवृत्ति संभव है।

परमात्मा का स्थान अन्य कोई नहीं ले सकता, वह परमात्मा सब प्राणियों में विद्यमान है।

परमात्मा की और सुन्दर व्याख्या ऋषि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज के नियमों एवं उद्‌देश्यों में बहुत सुन्दर की है जो इस प्रकार है–

"ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।"

इस प्रकार परमात्मा के स्वरूप का चित्रण ऋषि ने वेदादि सत्य शास्त्रों के आधार पर प्रस्तुत किया है।

परमात्मा की उपरोक्त व्याख्या एवं गुण, कर्म, स्वभाव से हटकर यदि हम अनित्य, नाशवान जड़ पदार्थों या मनुष्यों को परमात्मा मानकर ध्यान करेगें तो वह वास्तव में परमात्मा की स्तुति नहीं है अपितु परमात्मा के द्वारा प्रदत्त वस्तु या मनुष्य की स्तुति है। इस प्रकार हम परमात्मा की नहीं परमात्मा की वस्तुओं की स्तुति कर रहे हैं एवं भयवश उसे ही ईश्वर भक्ति समझ रहे हैं। जबकि हमारी श्रद्धा और विश्वास के धर्म ग्रंथ जिनका हमें अनुसरण करना ही

श्रेयष्कर है वे कहते हैं – **"य एक इत् तमुष्टुहि"** अर्थात् वह परमात्मा एक है उसी की भक्ति करनी चाहिए। पुनः उल्लेखित है। **"एक एव नमस्यो वीक्षवीड्यः"** अर्थात् एक परमेश्वर ही पूजा के योग्य है।

अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते।

ततो भूय इव ते तमो य उ सम्भूत्याऽरताः।। यजु. 40/9

पाषाण और वृक्षादि अवयव और मनुष्य आदि के शरीर की उपासना जो ब्रह्म के स्थान में करते हैं वे अज्ञानी उस अन्धकार से भी अधिक अन्धकार अर्थात् चिरकाल घोर दुःखरूप नरक में गिर के महाक्लेश भोगते हैं।

आगे तो वेद ने बहुत स्पष्ट कर ज्ञान का मार्ग दिखाया जो उस पर ब्रह्म (जो निराकार, सर्वव्यापक, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है।) हम उसके स्थान पर अन्य की या जड़ की प्रकृति की उपासना करते हैं वे अन्धकार में प्रवेश करते हैं।

आज हमने ईश्वर जो सर्वव्यापक है उसको सीमित कर उसका स्थान निश्चित कर दिया। उसे ढूँढ़ने जगह–जगह घूम रहे हैं। शायद इन्हीं परिस्थितियों में भगवान कृष्ण को कहना पड़ा –

नासतो विद्यते भावो,

ना भावो विद्यते सतः।

अर्थात् : जो जहां नहीं है उसे वहां मानना और जो जहां है उसको न होने का विचार करना दोनों ही भूल है। इसलिए हम केवल उस परब्रह्म की ही स्तुति करें, उसी की शरण में हमें शान्ति मिलेगी। भगवान कृष्ण ने अर्जुन को उपदेश देते हुए कहा **"तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारतः भाव"** हे अर्जुन तू सम्पूर्ण भाव से उस परमात्मा की शरण में जा।

आगे पुनः भगवान कृष्ण ने उपदेश दिया–**ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन् मामनु स्मरन्**। हे अर्जुन तू उस ब्रह्म ओ३म् का ही स्मरण कर।

जपूजी साहिब ने दर्शाया – **एक ओंकार सतिनामु –**

करता पुरखु निरभउ निरवैऊ।

अकाल मूर्ति अजूनी सैभ्य गुर प्रसादि।।

अर्थात् – वह ईश्वर ओ३म् एक है अद्वितिय है, सृष्टि का रचियता है भयव बैर से रहित है नित्य है, जन्म मरण से मुक्त है, उसकी उपासना करो।

ओमित्ये दक्षमुद्गीथा मुपासीत् ''छान्दोग्य''

ओउम् जिसका नाम है और जो कभी नष्ट नहीं होता है उसकी उपासना करनी योग्य है अन्य को नहीं, इसमें एक परमपिता परमात्मा की स्तुति का विधान परमात्मा से भिन्न स्तुति पूजा का निषेध है।

आज विश्व के कई धर्माचार्य मनो वैज्ञानिक, धर्माचार्यों द्वारा किया है इस सत्य को स्वीकार कर चुके हैं कि ओउम् नाम से शान्ति, ध्यान व ईश्वर के प्रति सुवृत्ति होती है।

इसलिए हम भक्ति में केवल उस परमात्मा की स्तुति ही करें, उसे ही श्रद्धा सुमन अर्पित करें। इस सत्य को अनेक धर्म ग्रन्थ, मजहब पुस्तकों ने भी स्वीकारा है, **एक साधे सब सधे** वाली कहावत सत्य है।

सन्त कबीर ने लिखा –

जो मन लागे एक सो, तो निरवारा जाय।
तूरा दो मुख बाजता, घना तमाचा खाय।।

अर्थात् – इधर उधर मन भटकाने से लाभ नहीं अपितु एक के प्रति श्रद्धा से ही हमारा उद्धार है, हमारी भक्ति भी तभी स्वीकार्य होगी।

अभिमान से दूरी

यदा किंचिज्ज्ञोऽहं द्विप इव मदान्धः समभवम्
तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवदवलिप्तं मम मनः।
यदा किंचित्किचिंद् बुधजनसकाशादवगतम्
तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः।।

भावार्थ – जब मुझे कुछ ज्ञान हुआ तो मैं हाथी के समान मदान्ध होकर अपने मन में ज्ञानी होने का गर्व करने लगा और समझने लगा कि मैं सर्वज्ञ हूँ। मेरे जैसा कोई नहीं, लेकिन जब मैं विद्व समाज से, ज्ञानी जनों से, सद् संगति से कुछ–कुछ प्राप्त कर सका या जब मुझे यथार्थ का ज्ञान हुआ, तब मेरा वह मद ज्वर के समान उतर गया और मैंने जाना कि मैं तो निपट मूर्ख हूँ।

वेदों में विज्ञान संकेत –

सूर्य से ऊर्जा की प्राप्ति

सं भानुना यतते सूर्यस्याजुह्वानो घृतपृष्ठः स्वंवाः।
तस्मा अमृध्रा उषसो व्युच्छान्य इन्द्राय सुनवामेत्याह।।

ऋग्वेद 5/37/1

इस शोध की अनन्त सम्भावनाएँ हैं। अब तक के किये गये प्रयास सूर्य से प्राप्त हो सकने वाली ऊर्जा के उपयोग की दिशा में शैशवावस्था में ही है।

भौतिकी – पदार्थ की तीन दशाएँ

त्रीणि त आहुर्दिवि बन्धनानि त्रीण्यप्सु त्रीणयन्तः समुद्रे।
उतेव मे वरूणश्छन्त्स्यर्वन्यत्रा त आहुः परमं जनित्रम्।।

ऋग्वेद 1/163/4

वैसे यह प्रार्थना मन्त्र है – उपमालंकार के रूप में वर्णित है कि अग्नि के कारण पदार्थों के तीन स्वरूप हैं। हे विद्वान, जैसे आपका विद्याजन्म श्रेष्ठ है वैसा मेरा भी हो। इस निवेदन के साथ पदार्थ की तीन दशाओं को दर्शाया गया है और अग्नि कारणी भूत देव है।

स्वतः चलित वाहन यान्त्रिकी

युङ्ग्ध्वं ह्यरूषी रथे युङ्ग्ध्वं रथेषु रोहितः।
युङ्ग्ध्वं हरी अजिरा धुरि बोळहवे वहिष्ठा धुरि बोळहवे।।

– ऋग्वेद 5/56/6

सूत्र रूप में इस मन्त्र में यह दर्शाया गया है कि अग्नि और वायु की संयुक्त शक्ति उत्पन्न की जाए तथा ऐसे संचालित कर शक्ति की अगली धुरी में प्रेषित कर वाहन को गति दी जाए। स्वतः चालित यन्त्रों के लिए यह मूल मन्त्र है और सभी वाहन इसी आधार पर चलते हैं।

सूर्य और पृथ्वी में आकर्षण

सविता यन्त्रैः पृथिवीमरम्णादस्कम्भने सविता द्यामदृहत्।
अश्वमिवाधुक्षद् धुनिमन्तरिक्षमतूर्ते बद्धं सविता समुद्रम्।।

ऋग्वेद 10/149/1

सूर्य रज्जू समान पृथ्वी को बाधता है, अनारम्भ/निराधार आकाश में अपने आस–पास स्थित न टूटने योग्य बंधे हुए, ध्वनि करते हुए घोड़े के समान घुमा रहा है।

गाय सर्वोत्तम क्यों !

गौ और कृषि अन्योन्याश्रित हैं। इसीलिए महर्षि ने गोकृष्यादिरक्षिणी सभा नाम रखा था। गाय का दूध सर्वोत्तम क्यों हैं ? इसमें निम्नलिखित मुख्य विशेषताएं हैं –

1. गाय का दूध पीला और भैंस का दूध सफेद होता है। इसीलिए इसके दूध के विशेषज्ञ कहते हैं कि गाय के दूध में सोने का अंश होता है जो कि स्वास्थ्य के लिए उत्तम है और रोगनाशक है।

2. गाय का दूध बुद्धिवर्धक और आरोग्यप्रद है।

3. गाय का अपने बच्चे के साथ स्नेह होता है जबकि भैंस का बच्चे कें साथ ऐसा नहीं होता है।

4. गाय के दूध में स्फूर्ति होती है। इसीलिए गाय के बछड़े व बछियॉ खूब उछलते कूदते फिरते हैं। भैंस का दूध पीने से आलस्य व प्रमाद होता है।

5. गाय के बछड़े को 50 गायों या अधिक में छोड़ दिया जाय तो वह अपनी माता को जल्दी ही ढूँढ़ लेता है। जबकि भैंस के बच्चों में यह उत्कृष्टता नहीं होती।

6. गाय का दूध तो सर्वोत्तम होता ही है, साथ ही गाय का गोबर व मूत्र भी तुलना में श्रेष्ठ है। गाय का गोबर स्वच्छ व कीटनाशक होता है। गाय की खाद तीन वर्ष तक उपजाऊ शक्ति बढ़ाती है किन्तु भैंस की खाद तो एक दो वर्ष बाद ही बेकार हो जाती है और गौमूत्र का स्प्रे करके कीड़ों के नाश में भी उपयोग लिया जाता है।

7. गौमूत्र उत्तम औषधि है। आयुर्वेद के ग्रंथों में पचास से भी अधिक रोगों में इसका उपयोग किया जाता है।

8. कृषि के कार्यों के लिए गाय के बछड़े सर्वोत्तम हैं। भारतवर्ष में आज के मशीनीयुग में भी 96 प्रतिशत खेती बैलों से होती है।

9. गाय एक सहनशील पशु है। वह कड़ी धूप व सर्दी को भी सहन कर लेती है। इसीलिए गाय जंगल में घूमकर प्रसन्न होती है।

10. गाय के दूध में सूरज की किरणों से भी निरोगता बढ़ती है। इसीलिए वह अधिक स्वास्थ्यप्रद है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की महानता

ऋषि महान, ऋषि महान, ऋषि महान तेरा नाम
पाने को भीतर आत्मज्ञान पहुँचे तुम विरजानन्द द्वार
सन्निध्य में उनके तुमने प्राणपण से कटी गुरू सेवा
सर्वस्व समर्पण कर अपना की आत्म साधना तन्मय होकर
लोकहित में तुमने अपना सर्वस्व न्यौछावर है जो किया
निन्दा, अपमान के घूँट पिये, किन्तु
न सत्य पथ तुमने छोड़ा युवा उत्थान हेतु

तुमने दिव्य शक्ति शंखनाद लिया संयम,
नियम, शीलता का तुमने है, सच्चा पाठ पढ़ाया है
नारी जागरण कर तुमने निज शक्ति रूप का बोध दिया
त्याग, चरित्र, मर्यादा का शाश्वत ज्ञान तुमने है दिया
बतला गौ माता की महिमा को, तुमने गौरक्षा कार्य किया।

इसलिए तो युगो–युगो तक तेरा दर्शन, चिन्तन है महान
ऋषि से बने महर्षि, कर महान दिव्य कार्य
युगो–युगो तक तेरी गाथा, गाते रहे सभी नर नार
तेरी दिव्या वाणी से, सदा रहे उपाधि महर्षि की सार्थक

सूर्य चन्द्र से तुम तेजस्वी, दिव्य है तेरा तेज महान
दिग्दिगंत तक गूँजे, तेरा जय दयानन्द उद्घोष महान
ऋषि महान, ऋषि महान, ऋषि दयानन्द तेरा नाम महान।।

जय ऋषि दयानन्द सरस्वती, जय आर्यावर्त

– सुनील राठौर
पिपल्यामण्ड़ी, जिला मन्दसौर

स्वच्छता अभियान

शहर के गन्दे नाले के किनारे,
नगर के पशु–पक्षी इकट्ठे थे सारे।
आपस में बैठकर सोच रहे थे,
और मोदी सरकार को कोस रहे थे।
सरकार की नीति और नियत पर कर रहे थे शंका,
उनकी जाति मिटाने की लग रही थी सरकार की मंशा।

एक बुजुर्ग बोले,
इस मोदी को न जाने क्या सूझा है,
जो पूरा सफाई अभियान में ही डूबा है।
अरे, आदमी, आदमी से बैर रखे, यहां तक तो समझ में आता है।
पर हम जैसे इस गन्दगी से पलते, इसमें इसका क्या जाता है।
गन्दगी ही मिटा देगा, तो हम क्या करेगें ?
साफ है भाईयों, सब भूखें ही मरेगें।

चलो, कांग्रेस का सफाया करने का सोचा, यहां तक तो ठीक है,
पर हमारे जीवन से खिलवाड़ करना, यह कहां की रीत है।

बाहर की गन्दगी साफ करके तो, हम जैसों का अन्त हो जाएगा।
पर, अन्दर पल रही गन्दगी इंसान की, उसे कैसे हटा पाएगा ?
हम तो थोड़ी सी जगह में ही गन्दगी फैलाते हैं,
पर उनका क्या, जो पूरे देश को ही नरक बनाते हैं।
गन्दगी से नफरत है, तो कुछ ऐसा करना चाहिए,
बाहर की गन्दगी के साथ–साथ अन्दर की भी हटाना चाहिए।

इस पर एक पक्षी बोला,
भाईयों चिन्ता मत करो, ये सफाई कुछ दिन का ही खयाल है,
ये भारत है, किसी के सुधरने का नहीं सवाल है।
हर आदमी गन्दगी फैलाने में माहिर है,
सड़क से संसद तक के, नजारे से जाहिर है।

इसलिए, व्यर्थ की चिन्ता छोड़ो,
बुराई का ठीकरा मोदी के सिर मत फोड़ो,
जैसा जो चल रहा है, वैसा ही चलता जाएगा।
दो दिन बाद आदमी, सफाई की बात भूल जाएगा।

– **प्रकाश आर्य, महू**

गतांक से आगे ......

वैदिक ज्ञान प्रश्नावली

प्र.48 ईश्वर की अनुभूति उस व्यक्ति को हो सकती है जो

1. मन्दिर जाता है 2. मस्जिद जाता है

3. गिरजाघर जाता है 4. जिनका मन पवित्र है

प्र.49 क्या भगवान और ईश्वर में अन्तर है ?

1. हॉ। भगवान उपाधि है 2. ईश्वर शब्द केवल परमात्मा के लिए है

3. क, ख दोनों ठीक हैं।

प्र.50 'ईश्वर सर्वशक्तिमान है' का क्या अर्थ है ?

1. अपने कार्यों में किसी की सहायता नहीं लेता।

2. वह हर प्रकार के कार्य कर सकता है।

3. वह प्रकृति को भी खत्म कर सकता है।

प्र.51 ईश्वर के कार्य क्या हैं ?

1. संसार को उत्पन्न करना 2. पालन करना, संहार करना

3. जीवों को कर्मों का फल देना 4. क, ख, ग तीनों

प्र.52 ईश्वर के कोई से तीन मुख्य विशेषण लिखिए।

उत्तर – सर्वव्यापक, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान।

प्र.53 क्या भक्ति से पाप क्षमा हो जाते हैं

1. हॉ 2. नहीं 3. ईश्वर इच्छानुसार

प्र.54 यदि भक्ति से पाप क्षमा नहीं होते तो भक्ति का क्या लाभ है ?

1. मन की शान्ति और आत्मिक उन्नति है। 2. कोई लाभ नहीं

3. भक्ति न करने वालों को ईश्वर सजा देता है।

प्र.55 ईश्वर निराकार है इसका क्या अर्थ है ?
1. उसका कोई शरीर नहीं। 2. वह हर स्थान पर है।
3. वह सर्वशक्तिमान है।

प्र.63 ईश्वर ने वेद ज्ञान किसके लिए दिया।
1. ईसाईयों के लिए 2. हिन्दुओं के लिए
3. मुसलमानों के लिए 4. प्राणीमात्र के लिए

प्र.64 वेदों का ज्ञान ईश्वर ने कब दिया।
1. 5000 वर्ष पहले 2. अरबों वर्ष पहले
3. सृष्टि के आरंभ में 4. जब–जब आवश्यकता हुई

प्र.65 वेदों का ज्ञान किसने दिया।
1. दयानन्द 2. मनुष्य 3. ईश्वर 4. ऋषियों ने

प्र.66 संसार में प्राचीनतम पुस्तक कौन सी है ?
1. कुरान 2. बाईबल 3. वेद 4. गीता

प्र.67 वेदों का ज्ञान ईश्वर ने कैसे दिया ?
1. समाधी अवस्था में 2. ऋषियों ने स्वयं सीखा
3. अपने दूतों के द्वारा 4. पुस्तकों द्वारा

प्र.68 वेदों में ज्ञान कैसा है ?
1. इतिहास 2. ईश्वरीय ज्ञान 3. पूजापाठ 4. शिक्षाप्रद कहानियॉ

प्र.69 गायत्री मन्त्र की महिमा क्यों है ?
1. इसमें अच्छी बुद्धि के लिए प्रार्थना है।
2. इसमें सुख और शान्ति की प्रार्थना है।
3. यह ईश्वर भक्ति का बहुत अच्छा मन्त्र है।
4. पाप क्षमा होते हैं।

क्रमशः...............

समाचार –

आर्य समाज मन्दिर मुरार ग्वालियर का वार्षिकोत्सव एवं विश्वशान्ति महायज्ञ 17, 18, 19 नवम्बर 2017 को सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर मुरार ग्वालियर म. प्र. के तत्वावधान में तीन दिवसीय विश्वशान्ति महायज्ञ एवं वार्षिकोत्सव 17, 18, 19 नवम्बर 2018 को 51 जोड़ों ने 20 हवन कुण्ड़ों में बड़े उत्साह के साथ आहुतियॉ डाली। इस अवसर पर गुरूकुल होशंगाबाद के आचार्य आनन्द पुरूषार्थी डॉ. सत्येन्द्र शास्त्री, ग्वालियर, पं. अजय आर्य भजनोपदेशक, मेरठ ने तीनों दिन प्रवचन, भजन, सत्संग में वेद की कथा से जन जागृति पैदा की। ग्वालियर में पहलीबार आर्य समाज मुरार के सहयोग से सेन्ट्रल जेल ग्वालियर में कैदियों को रोगमुक्त, टेन्शनमुक्त, सुखी–समृद्धि और राष्ट्रभक्त बनने की प्रेरणा आचार्य आनन्द पुरूषार्थी ने दी। मन्त्री वी. एम. गच्छ और प्रधान रामप्रकाश वर्मा एवं सभी आर्य समाज के पदाधिकारियों ने कार्यक्रम को सफल बनाया। जिसमें गणेशराम शर्मा, मानसिंह यादव, परमालसिंह कुशवाह, राजेन्द्र तिवारी, राजेन्द्र कुमार बरेली, केशवमुनि एवं आमन्त्रित विद्वानों को शॉल श्रीफल, दक्षिणा से सम्मानित किया गया। वी. एम. गच्छ, अरूण गौडत्र, प्रणव कुमार गच्छ, हरिकिशन शास्त्री, प्रेमशंकर रस्तोगी, हरिश नारायण गच्छ, विजय सूद, शिवचरण लाल शर्मा, मोनू यादव, परमालसिंह राणा, धर्म विजयपाल सिंह रांणा, विकास घये, दयाराम आर्य, बालकिशन राजपूत, शिवम राजपूत एवं कप्तानसिंह गुर्जन, चन्द्रप्रकाश अग्रवाल, कमलेशचन्द्र अग्रवाल, संजय यादव एवं आर्य वीर दल के युवाओं ने सहयोग किया। विशाल जनजागृति रैली बैण्ड बाजों, ओमध्वज और नारे लगाते हुये मुरार शहर में भ्रमण किया। तीनों दिन सुबह–शाम ग्वालियर के विभिन्न आर्य समाजी लोगों ने कार्यक्रम में सहभागिता की। विशेष रूप से आर्य समाज चित्रगुप्त गंज, लोहामण्डी, गोसपुरा, गोरमी, भिण्ड, दतिया, डबरा, अकलोनी, सुरपुरा आदि ने यज्ञब्रह्मा आचार्य आनन्द पुरूषार्थी ने 51 जोड़ों से नशामुक्ति और अच्छे साहित्य वेदों को पढ़ने–पढ़ाने की शपथ दिलाई।

पूर्णाहुति के दिन भारी संख्या में मुरार वासियों ने ऋषि लंगर में प्रसाद ग्रहण किया और वेदों के मान प्राप्त किया। पुस्तक विक्रेता, भिण्ड, अलवर, ग्वालियर, दतिया से पधारे जिनसे लोगों ने अपनी मनचाही पुस्तकों को खरीदा गया। कार्यक्रम का संचालन शास्त्री और कोषाध्यक्ष केप्टन शिवचरन लाल शर्मा ने किया एवं आभार प्रदर्शन मन्त्री वी. एम. गच्छ और प्रधान रामप्रकाश वर्मा एवं आर्य समाज की कार्यकारिणी के समस्त पदाधिकारियों ने किया।

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा की वृहद बैठक सम्पन्न

इन्दौर। प्रदेष की औधौगिक नगरी इन्दौर में मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक सम्पन्न हुई। दिनांक 10/06/2018 को प्रान्त के विभिन्न क्षेत्र से लगभग 275 सदस्य आर्य समाज दयानंदगंज इन्दौर में एकत्रित हुए।

आगामी माह अक्टूबर में आयोजित अन्तरष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन के सम्बन्ध सभा प्रधान श्री सुरेषचन्द्र आर्य एवं सभा उपमंत्री श्री विनय आर्य सभा को सम्बोधित करने हेतु पधारे थे। आर्य समाज की वर्तमान स्थिति कार्यो की समीक्षा भावी योजनाओ की जानकारी देते हुए श्री विनय आर्य ने सभा को सम्बोधित किया।

सभा प्रधान श्री सुरेष चन्द्र आर्य ने देष विदेष में आर्य समाज के बढ़ते कार्यो की विस्तृत जानकारी दी। अन्तराष्ट्रीय महासम्मेलन का महत्व और अभी तक सम्पन्न हुए महासम्मेलनों की विस्तृत जानकारी दी।

सम्मेलन में भाग लेने की प्रेरणा श्री विनय आर्य और सभा प्रधान जी द्वारा दी गई।

उपस्थित सदस्यों में नवयुवकों की उपस्थिति बड़ी संख्या में थी।

श्री दक्षदेव गौड़ उपमन्त्री इन्दौर संभाग द्वारा सभा की गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण देते हुए बताया कि विगत 4 वर्षों में सभा द्वारा 41 नई आर्य समाजों का गठन किया गया है, इस वर्ष 2018 के अन्त तक 50 आर्य समाजों की स्थापना का लक्ष्य रखा गया है।

शाजापुर क्षेत्र के मोहन बड़ोदिया में कन्या गुरूकुल प्रारंभ करने का निर्णय लिया है जिसके भवन निर्माण का कार्य प्रारंभ हो चुका है।

सभा प्रधान जी ने सभा की जानकारी पर हर्ष व्यक्त करते हुए दो लाख इक्यावन हजार रूपयों के दान की घोषणा की, सभा में उपस्थित आर्यजनों ने भी लगभग 2 लाख रूपयों की घोषणा की।

इस अवसर पर सभा के सहयोग से एक बालिका को कन्या गुरूकुल में अध्ययन हेतु सहयोग की घोषणा की गई।

कार्यक्रम में प्रान्तीय सभा प्रधान श्री इन्द्रप्रकाषजी गॉधी, सार्वदेषिक एवं प्रान्तीय सभामन्त्री श्री प्रकाष आर्य, सातों संभाग के उपप्रधान, उपमन्त्री जिला तथा तहसील संयोजक उपस्थित थे। कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावी और चेतना प्रदान करने वाला था। सम्मेलन में हजारों की संख्या में दिल्ली जाने का आष्वासन दिया।

सभा प्रधान द्वारा इन्दौर संभाग का निरीक्षण –

सभा प्रधान श्री सुरेषचन्द्र जी आर्य द्वारा इन्दौर की प्रमुख समाजों व प्रदेष के सर्वश्रेष्ठ अनाथालय का निरीक्षण किया गया। आर्य समाज दयानन्दगंज, आर्य समाज संयोगितागंज, नगर आर्य समाज, स्वामी श्रद्धानन्द अनाथालय का निरीक्षण देर रात्रि तक किया। इन्दौर में आर्य समाज के कार्यों और व्यवस्था की सभा प्रधान जी ने बहुत प्रषंसा की।

श्री श्वेतकेतु वैदिक ने मासिक पत्रिका वैदिक रवि के 100 सदस्य बनाए और उनकी राशि 20,000/– जमा करवाई, उपस्थित सदस्यों ने करतल ध्वनि से उनका अभिवादन किया।

आर्य समाज का शपथ ग्रहण कार्यक्रम आयोजित

ग्वालियर। मुरार आर्य समाज मन्दिर के पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण समारोह रविवार को आर्य समाज मन्दिर में आयोजित किया गया। इस अवसर पर ग्वालियर संभाग के उप प्रधान मानसिंह यादव ने नवीन कार्यकारिणी को शपथ दिलाई।

शपथ लेने वालों में प्रधान रामप्रकाश वर्मा, उपप्रधान परमारसिंह राणा, उपप्रधान प्रेमसिंह रस्तोगी, मन्त्री विष्णुमित्र गच्छ, उपमन्त्री धर्म विजयपा सिंह राणा, उपमन्त्री विकास घई, कोषाध्यक्ष पूरनसिंह राणा, आर्य वीर दल प्रभारी संजय यादव, पुस्तकालय अध्यक्ष मोनू यादव, भू सम्पत्ति अधिष्ठाता रमेश राणा, आय व्यय अधिकारी विजय सूद, पुरोहित सतेन्द्र शास्त्री, अन्तरंग सदस्य दयाराम यादव, सत्यपाल अरोरा, रविन्द्रनाथ शर्मा, स्वामी ब्रजेशानन्द आदि मौजूद थे।

योग एवं प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

वेद प्रचार मण्डल तह. मल्हारगढ़ जिला मन्दसौर के द्वारा दि. 24 से 27 मई 2018 चार दिवसीय योग एवं प्रशिक्षण शिविर रखा गया। प्रशिक्षण आचार्य चन्द्रेश जी आर्यवन रोजड़ गुजरात के द्वारा दिया गया। प्रशिक्षण में ध्यान योग, ईश्वर उपासना विधि, चित्त की एकाग्रता के लिये क्रियात्मक योगाभ्यास, योग के आठ अंग, चित्त के बदलने की विधि, प्रसन्न चित्त रहने के उपाय एवं गृहस्थ में सुखी रहने के उपाय इत्यादि गूढ़ रहस्यों का ज्ञान कराया गया।

शिविर का समय प्रातः 5 बजे से रात्रि 10 बजे तक का था। इस शिविर में आर्य समाज गॉव बूढ़ा, टकरावद, नारायणगढ़, बरखेड़ा पंथ, नैनोरा, कनघट्टी, खेड़ा खदान एवं इन्दौर इत्यादि से 115 पुरूष एवं महिलाओं ने भाग लिया।

शिविर की व्यवस्था एवं संचालन करने में आर्य समाज बूढ़ा के पदाधिकारी के अतिरिक्त विनोद नागरिया, पं. सत्येन्द्र आर्य एवं संभाग के उपप्रधान बंशीलाल आर्य ने विशेष सहयोग दिया।

क्रियात्मक योग एवं प्रशिक्षण शिविर का यह प्रथम प्रयास पूर्णतः सफल रहा, जो सराहनीय है।

आर्य समाज गंज सीहोर का 87 वॉ वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

सीहोर। आर्य समाज गंज सीहोर ने अपना 87 वॉ वार्षिक अधिवेशन दिनांक 25, 26, 27 मई 2018 को पूर्ण उत्साह व उमंग के साथ मनाया।

कार्यक्रम में देश के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य श्री विष्णुमित्र वेदार्थी बिजनौर उत्तर प्रदेश से, श्री प्रकाश आर्य, महू (मन्त्री मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल) से तथा आर्य जगत की ख्याति प्राप्त भजनोपदेशिका श्रीमती संगीता आर्या सहारनपुर उत्तर प्रदेश से एवं विशेष अतिथि के रूप में मध्य प्रदेश खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष दर्जा केबीनेट मन्त्री श्री सुरेश आर्य प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

आचार्य श्री विष्णुमित्र वेदार्थी जी ने श्रोताओं को तीनों दिन अपनी आकर्षक प्रवचन शैली से बॉधे रखा। उन्होंने प्रातःकाल ईश्वर उपासना विषयों पर एवं सायंकाल राष्ट्रीय एवं सामाजिक विषयों पर वेदानुकूल समाधान प्रस्तुत किए।

उन्होंने बताया कि धर्म के बिना राष्ट्रवाद अधूरा है तथा धार्मिक एकता लाये बिना राष्ट्रीय एकता असंभव है, उन्होंने सभी से मिलकर राष्ट्रवादी शक्तियों को सहयोग करने का आव्हान किया।

श्रीमती संगीता आर्या एवं श्री दीपक आर्य ने अपने ईश्वर भक्ति एवं राष्ट्र भक्ति से ओतप्रोत सुमधुर भजन, प्रवचन से श्रद्धालुओं का मन मोह लिया।

कायक्रम में मुख्य अतिथी के रूप में मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल के ऊर्जावान मन्त्री श्री प्रकाश आर्य शामिल हुए। उन्होंने वैदिक राष्ट्रवाद विषय पर अपने प्रभावी उद्‌बोधन में राष्ट्र की वर्तमान समस्याओं का वैदिक समाधान प्रस्तुत किया तथा इसी परिप्रेक्ष्य में देश के प्रति आर्य समाज की भूमिका भी आर्यजनों को समझायी। आपके उद्‌बोधन से उपस्थित जन समूह को एक नव चेतना मिली, सभी ने बहुत सराहा।

अपने उद्‌बोधन के पश्चात प्रकाशजी ने आर्य समाज के नवनिर्मित भवन एवं यज्ञशाला का भ्रमण किया तथा महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए।

कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में मध्य प्रदेश खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष (दर्जा केबीनेट मन्त्री) श्री सुरेश आर्य पधारे।

श्री सुरेश आर्य ने अपने उदबोधन में स्वयं को पूर्व आर्य वीर दल का कार्यकर्ता बताया तथा राष्ट्र निर्माण तथा वदों की पुर्नस्थापना में आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द के योगदान की भूरी–भूरी प्रशंसा की। इतना ही नहीं उन्होंने सभी आर्यजनों को हाथ उठवाकर दयानन्द के सपनों का भारत बनाने का संकल्प भी दिलाया।

कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज के मन्त्री भगतसिंह आर्य एवं समाज के माननीय सदस्यों श्री हरनाम कसोटिया (वरिष्ठ), श्री अवध नारायण आर्य (वरिष्ठ), श्री जगमोहन आर्य (वरिष्ठ), श्री नरेशचन्द्र आर्य (उपप्रधान), श्री नरेन्द्र आर्य (पूर्व मन्त्री), श्री रामदयाल आर्य (पूर्व उपमन्त्री), श्री बाबूलाल आर्य (पुस्तकालय अध्श्क्ष), श्री रामभरोसे आर्य (कोषाध्यक्ष), श्री फूलचन्द आर्य (वरिष्ठ), श्री रमेश आर्य (वरिष्ठ), आर्य रमेश राठौर (आर्य वीर दल अधिष्ठाता), श्री राजेन्द्र आर्य (वरिष्ठ), नितिन नरोलिया (उपमन्त्री), निलेश आर्य (उपमन्त्री), राजकुमार राठौर (प्रचार मन्त्री), सूर्यकान्त आर्य (प्रचार मन्त्री), श्री राजीव गुप्त (पूर्व मन्त्री), श्री अरूषेन्द्र शर्मा (पूर्व मन्त्री), श्री राजेन्द्र कसोटिया, श्री रामसिंह मास्टर, आचार्य चन्द्रदेव (पूर्व उपमन्त्री), राकेश आर्य, अनूप आर्य, हेमराज प्रजापति, निलेष जैन, विकास आर्य, वैभव आर्य, आर्यमन राठौर, श्रीमती अनिता राठौर, श्रीमती सरला कसोटिया, श्रीमती वर्षा राठौर, श्रीमती श्वेता राठौर आदि ने की। अन्त में सभी अतिथियों का आभार आर्य समाज सीहोर के प्रधान आर्य रितेश राठौर ने किया।

आर्य समाज का वार्षिक चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज मल्हारगंज इन्दौर म. प्र. की कार्यकारिणी का 2018–19 का वार्षिक चुनाव निर्विघ्न एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा नियुक्त इन्दौर संभागीय प्रधान श्री गोविन्दराम आर्य की अध्यक्षता में रविवारीय सत्संग के पश्चात दिनांक 3/6/2018 को सर्वसम्मति से निर्विरोध सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर चुनाव अधिकारी महोदय की उपस्थिति में वर्ष 2018–19 हेतु सर्वसम्मति से डॉ. दक्षदेव गौड़ (प्रधान), डॉ. विनोद अहलुवालिया (मन्त्री) तथा ठाकुर हरिसिंह आर्य को (कोषाध्यक्ष) के रूप में सभी सभासदों ने निर्विरोध रूप से चुना। इसके पश्चात चुनाव अधिकारी ने नव निर्वाचित समस्त पदाधिकारियों को बधाई दी व कर्तव्यों के प्रति जागरूक, निष्ठावान रहने का सन्देश दिया। अन्त में नव निर्वाचित कार्यकारिणी ने उपस्थित सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

आर्य समाज रतलाम का तीन दिवसीय उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज रेल्वे कॉलोनी रतलाम का तीन दिवसीय उत्सव दिनांक 1 से 3 जून को सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम में अजमेर ऋषि उद्यान से आचार्य सोमदेवजी, भजनोपदेशक श्री श्यामजी राघव, अमिनेश शास्त्री एवं सभामन्त्री श्री प्रकाशजी आर्य पधारे थे।

प्रातःकालीन सत्र में यज्ञ–भजन व वेदोपदेश, सायंकालीन सत्र में भजन व प्रवचन का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में भगवानदास अग्रवाल, श्यामलाल सोनी, अखिलेश मिश्रा, आर्य राधेश्याम बियाणी महू, प्रकाश अग्रवाल, गुप्ताजी, प्रमोद गुप्ता, कमलजीतसिंह, बंशीलाल आर्य सहित धामनोद, सैलाना, झाबुआ आदि स्थानों से अनेक आर्यजन एवं महिला सदस्य उपस्थित हुए।

चलो दिल्ली। चलो दिल्ली।।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की श्रृंखला में 14 वां अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली में **दिनांक 25, 26, 27 एवं 28 अक्टूम्बर 2018** को सम्पन्न होने जा रहा है। सम्मेलन में भाग लेने देश के प्रत्येक प्रान्त से एवं अनेक देशों के प्रतिनिधि विशाल संख्या में पहुंच रहे हैं। व्यवस्था की दृष्टि से सम्मेलन में जाने वाले इच्छुक व्यक्ति अपने नाम शीघ्र भेजने हेतु व विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें –

सम्मेलन में आवास व भोजन तथा कार्यक्रम स्थल तक पहुंचने की वाहन व्यवस्था सभा की ओर से की जावेगी।

भवदीय :
प्रकाश आर्य
मन्त्री : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली
मोबा. 9826655117

कुछ समाजों के प्रतिनिधि चित्र अभी तक प्राप्त नहीं है, कृपया शीघ्र महू पते पर भेजें।

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

अगली प्रकाशित होने वाली अन्य पुस्तकें

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर को मानने से पहले उसे जानना आवश्यक है, ईश्वर वही है जो-सच्चिदानन्दस्वरूप निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य

...हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

सम्प्रदायों, मज़हबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचार धाराएं हैं, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म उस एक परमात्मा का ज्ञान हैं, इसलिए सब मनुष्यों का धर्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

आर्य समाज

मानव कल्याणार्थ

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

AMIT CHATURVEDI # 98262-71062

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा
तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा कौशल प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित कराकर
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक - प्रकाश आर्य, मह